© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 10 | October – December 2017

प्रेमचन्द के कथा साहित्य में वर्णित समस्याएं और वर्तमान समाज की समस्याओं की तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. राकेश कुमारी (Lecturer in Hindi),GGSSS. Barwala Pkl. (Haryana

ABSTRACT

प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य अपने युगीन वातावरण को अभिव्यक्त किया हैं। उन्होंने अपने साहित्य में उन मूल समस्याओं को उठाया है जो सैकड़ों वर्षों से हमारे समाज के सम्मुख मुँह खोले खड़ी हुई है। वर्तमान समाज में भी ये समस्याएँ जैसे की तैसी बनी हुई हैं। बस बदलता है तो उनका स्वरूप। प्रेमचन्द के कथा साहित्य का समय पराधीनता का था। लेकिन आज हम आजाद देश में रहते हुए भी इन समस्याओं का सामना प्रतिदिन कर रहे है। इसी को लेकर यह अध्ययन किया गया है।

Keywords : प्रेमचन्द, साहित्य, समाज, समस्याएँ

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज का पूरा प्रतिबिम्ब हमें तत्कालीन साहित्य रूपी दर्पण में दिखाई पड़ता है। प्रेमचन्द का कथा साहित्य इसका अपवाद नहीं है। प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य अपने युगीन वातावरण को अभिव्यक्त किया हैं। हिन्दी कथा साहित्य में जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द का नाम अग्रणीय है। प्रेमचन्द ने कथा साहितय को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के साथ जोड़ने का काम किया। साहित्य और समाज दोनों में गहरा सम्बन्ध है। इसलिए प्रेमचन्द ने हिन्दी कथा साहित्य को समाज के साथ जोड़ा। यदि कोई साहित्यकार अपनी युगीन परिस्थितियों की अवहेलना करता है, तब उसका साहित्य उस समाज से कट जाता है।

प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में समाज की प्रत्येक समस्या को अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनाओं के विषय मानव जीवन से जुड़े हुए है। चाहे वह उपन्यास हो या कहानी। उनहोंने अपने रचनाओं में उन सभी समस्याओं का उल्लेख किया, जिन समस्याओं का सामना वर्तमान समाज भी कर रहा है। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में किसान के शोषण की समस्या रूढ़ि एवं अन्धविश्वास की समस्या दलितों की समस्या भ्रष्टाचार की समस्या महिलाओं से सम्बन्धित समस्याएँ आदि सभी समस्या को उद्घटित की है। आधुनिक समाज इन सभी समस्याओं से ग्रसित है। यह तो निर्विवादित सत्य है कि वर्तमान समाज प्रेमचन्द युगीन समाज से कई स्तरों से भिन्न है। प्रेमचन्द का पूरा रचना काल पराधीनता के समय हुआ। आज हमें आजाद हुए काफी समय हो गया है। वर्तमान में हम इक्कीसवीं सदी में रह रहे हैं। इसलिए आज का वातावरण प्रेमचन्द युगीन वातावरण से भिन्न है। लेकिन प्रेमचन्द ने अपने कथा साहितय में कुछ ऐसी मूलभूत समस्याओं को उठाया है जो न केवल प्रेमचन्द युग में विद्यमान थी बल्कि आज भी हमारे सामने वे दानव के समान मुँह फैलाए खड़ी है। इन्हीं कुछ समस्याओं के आधार पर प्रेमचन्द युगीन समाज और वर्तमान समाज की तुलना की जा सकती है।

प्रेमचन्द ने मुख्य रूप से जिस समस्या को अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त किया वह है शोषण की समस्या। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग के शोषण को दर्शाया है चाहे वह किसान वर्ग, हो मजदूर वर्ग, दलित वर्ग या फिर स्त्री वर्ग हो। प्रेमचन्द ने ''गोदान'' उपन्यास में किसान के शोषण की जो कथा प्रस्तुत की गई है, वह कहीं भी अतिरंजित नहीं लगती। यह कथा पूर्णतया भारतीय किसान के जीवन से सरोकार रखती हैं वर्तमान में गरीब भारतीय किसानों की हालत कमोवेश होरी जैसी ही है। इस उपन्यास में जिस तरह जमींदार पटवारी, सूदखोर पुलिस बिरादरी तथा धर्म के ठेकेदार आदि सब उसका शोषण करते है और अंततः शोषण का शिकार होरी किसान से मजदूर बनने को विवश हो जाता है। उपन्यास में एक स्थान पर होरी कहता है कि ''कितना चाहता हूँ कि किसी से एक पैसा कर्ज न लूँ लेकिन हर तरह का कष्ट उठाने पर ''गला नहीं छूटता।'' आज भी कभी बच्चों की शिक्षा के लिए तो कभी शादी के लिए तथा कभी जरूरी घर खर्च के लिए या तो बैंक सेकर्ज लेता या फिर समाज के धनी वर्ग से। वर्तमान में भी किसान फसलों की कम पैदावार से या फिर दूसरी कठिनाईयों के कारण कर्ज चुकाने में असमर्थ होता है। उसका कर्ज सूत के कारण बढ़ते–बढ़ते इतना हो जाता है कि वह उसको चुका नहीं पाता और अंततः वह आत्महत्या करने को मजबूर हो जाता है। पूरे भारतवर्ष में अनेकों कृषक कर्ज के बोझ के कारण आत्महत्याऐं कर रहे है। आज भी किसान होरी की तरह अपनी एक छोटी सी इच्छा पूरी नहीं कर सकते। एक तरफ तो सरकार गरीब किसानों की सहायता करती है तो दूसरी तरफ महंगाई बढ़ाकर उनका शोषण करती है। धनी वर्ग के लोग उची दरों पर कर्ज देकर उनका शोषण कर रहे है। ये प्रत्येक जरूरी कार्य करने के लिए किसानों से रिश्वत लेते है। सरकारें किसानों की सस्ते मूल्यों पर जमीन खरीदकर किसानों को मजबूर बनाने के लिए विवेश कर रही है। अंततः प्रेमचन्द ने गोदान उपन्यास में किसान वर्ग के शोषण का जो वर्णन किया है, वह वर्तमान समाज में भी देखने को मिलता है। इसके अलावा प्रेमचन्द ने नशा कफन पस की रात बाबा जी का भोग सद्गति आदि कहानियों में किसानों के शोषण पर कठोर टिप्पणी की है। प्रेमचन्द के समय से लेकर अब तक वह समस्या समाज के किसानों को जकड़ी हुई। बस तौर तरीकों में अन्तर हैं। प्रेमचन्द ने अनेकों उपन्यास तथा कहानियों में दलित वर्ग की समस्याओं को बड़ी अच्छी तरह व्यक्त किया है। उन्होंने उपन्यास प्रेमाश्रम, कर्मभूमि आदि में दलितों के साथ होने वाले शोषण से सरोकार किया है।

'प्रेमाश्रम' उपन्यास में पुलिस का दलितों के प्रति रवैया तथा उनके द्वारा किया जाने वाला शोषण, बेगार तथा मारपीट को दर्शाया है। वर्तमान समय में भी पुलिस का रवैया दलितों के प्रति कुछ ऐसा ही है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में लेखक ने अछूतों के मंदिर प्रवेश की समस्या को किया । आज के समाज में भी यह समस्या दूर–दराज के ग्रामीण इलाके में देखने को मिलती है। ठाकुर का कुआँ, सदगति पूस की रात, गुल्ली–डंडा, दूध का दाम आदि कहानियों प्रेमचन्द ने दलितों का शोषण कौन–कौन करता और कितने मुहानों पर होता आदि सब का स्पष्ट वर्णन किया है। प्रेमचन्द ने दलितों का शोषण कौन–कौन करता और कितने मुहानों पर होता आदि सब का स्पष्ट वर्णन किया है। प्रेमचन्द ने दलितों की जिन समस्याओं का वर्णन अपने साहित्य में किया हैं वे समस्याऐं वर्तमान समाज में पाई जाती है। उच्च वर्ग के लोग आज भी दलितों का

शोषण करते कभी–कभी तो उनके मकानों को भी जला दिया जाता है। दलित जाति के लोग मजबूर उस गाँव से पलायन करते हैं मिर्चपुर कांड तथा गोहाना कांड इसके ताजा उदाहरण है। सरकार के द्वारा कानून तथा अधिनियम बनाने के बावजूद दलितों की दशा आज भी ज्यादा अच्छी नहीं है प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में दलित महिलाओं की जिस दशा का वर्णन किया है वह अब भी देखने को मिलती हैं।

रूढ़ि एवं अंधविश्वास जैसी समस्या को भी प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में गंभीरता से लिया है। आधुनिक विज्ञान का युग होने के बावजूद अंधविश्वास जैसी समस्या कहीं ने कहीं आज भी देखने व सुनने को मिलती है। बाबा जी भोग कहानी में प्रेमचन्द ने अंधविश्वास पर बड़ा ही सार्थक सटीक व्यंग्य किया है। इस कहानी में एक साधु बाबा गरीब किसानों को भगवान के नाम पर डराकर उनका शोषण करता है। वह भगवान के भोग के नाम पर लोगो से खाने–पीने तथा अन्य वस्तुऐं हड़पता है। इस कहानी के साधु बाबा जैसे अनेक ढ़ोगी साधु व पंडित आज भी गरीबों लोगों को अपने आज में फंसाकर उनका धन हर लेते है। कुछ साधु भावनात्मक तरीके से लोगों का शोषण कर रहे है। कई बार तो मिलाओं का शारीरिक शोषण किया जाता है। ऐसे समाचार हम आए दिन समाचार पत्रों में पढ़ते हैं। अंधविश्वास की समस्या प्रेमचन्द युगीन समाज में भी थी और आज के समाज में भी मौजूद है।

प्रेमचन्द ने कथा साहित्य में नारियों के साथ होने वाले शोषण एवं अत्याचार की समस्या को व्यापक रूप से दर्शाया है। सेवासदन प्रेमाश्रम, निर्मला आदि उपन्यासों में नरियों के साथ होने वाली प्रत्येक समस्या का व्यापक वर्णन किया है। सेवासदन उपन्यास में विवाह से जुड़ी समस्याओं दहेज–प्रथा, कुलीनता का प्रश्न पत्नी का स्थान आदि को उठाया है। वर्तमान समाज में ये सभी समस्या विद्यमान् है। 'निर्मला उपन्यास में दहेज के कारण ही निर्मला का विवाह डॉ. भूवन मोहन सिन्हा के साथ नहीं हो पाता। उसका विवाह वर्षीय विधुर व तीन पुत्रों के पिता तोताराम के साथ होता है। आज के समाज में भी अनेकों युवतियों के साथ ऐसा होता है। दहेज के लालची लोग नवयुवतियों को तंग करते है, कभी–कभी उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाता है। एक तरफ तो हमारा समाज व सरकार महिलाओं को दिए गए अधिकार का गुणगान करते है तो दूसरी तरफ उतने ही अपराध बुढ़ते जा रहे है। आज के समय में हालात इतने बुरे हो गये है कि चलती बस में बेटियों की इज्जत लूटी जाती है। हाल में ही उद्योग संगठन एसोचैम ने यह निष्कर्ष अपने ताजा सर्व में निकाला है कि 55 फिसदी कामकाजी महिलाएं भेदभाव की शिकार होती है 29 फिसदी पढ़ी–लिखी महिलाएं शारीरिक शोषण का शिकार होती है। 70 फीसदी महिलाओं की घर के बड़े फैसलों में भागीदारी नहीं है। इस सर्वे से हम ये अंदाजा लगा सकते है कि काम–काजी व पढ़ी–लिखी औरतों की यह हालत है तो घर पर कार्य करने वाली या अनपढ़ औरतों की हालत कैसी होगी। महिलाओं के साथ होने वाले अतयाचारों के कारण अनेकों राज्यों का लिंग अनुपात बढ़ रहा है। वर्तमान समाज में यह समस्याएं ज्यादा भयंकर रूप धारण किए हुए हैं।

आज पूरा देश जिस समस्या से जूझ रहा है, वह समस्या है भ्रष्टाचार व घूसखोरी। आज गरीब या धनी सब इस समस्या का सामना किसी न किसी रूप में कर रहे है। इस समस्या का

वर्णन प्रेमचन्द ने 'नमक को दारोगा' कहानी में चित्रित किया है। इस कहानी में वंशीधर दारोगा को अलापीदीन रिश्वत देने की कोशिश करता है। परन्तु वह अपनी ईमानदारी के कारण रिश्वत नहीं लेता और अलापीदीन को गिरफ्तार करता है। लेकिन वकीलों, गवाहों आदि को पैसे से खरीद कर अलापीदीन अदालत से बरी होकर निकलता है। आज के समाज में भी अनेकों मुजरिम व भ्रष्टाचारी घूस के कारण अदालत से बरी हो जाते है। 'गबन' उपन्यास में प्रेमचन्द भ्रष्ट पुलिस का वर्णन किया है। भ्रष्ट पुलिस किस तरह झूठी गवाही दिलवाकर कुछ निरपराधियों को सजा दिलवाती है। वर्तमान समय में भी कितने ही निर्दोषों को रिश्वत के कारण सजा काटनी पड़ती है। 'गबन' में रमानाथ चुँगी का क्लर्क बनकर अपना कमीशन पहले ही तय कर लेता है। प्रेमचन्द के साहित्य में जो भ्रष्टाचार के दृश्य है। वे आज किसी भी सरकारी या निजी विभाग में जाकर देखे जा सकते हैं। प्रेमचन्द ने 'मन' कहानी में राजनीति में चंदे के नाम पर चलने वाले भ्रष्टाचार को उद्घाटित किया हैं हिन्दू सभा नाम के पंडित जो चंदा वसूल करते ये उनका आधार हिस्सा वह अपने परिवार तथा सैर–सपाटों में खर्च कर देते थे। वर्तमान समय में हमारे राजनेता जनता के पैसा का आधार से ज्यादा खर्च अपने विदेश दौरों या फिर अपने परिवारों के खर्चों पर कर देते है। वर्तमान में भ्रष्टाचार एक छूत की बिमारी है जिससे सरकारी कम्रचारी ही नहीं राजनेता भी नहीं बच सके। मौजूदा सरकार के कई बड़े मन्त्रियों पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे है। बड़े शर्म की बात है कि आज कोई भी क्षेत्र इस समस्या से अछूता नहीं है। चाहे वह खेल का मैदान ही क्यों न हो। चारा घोटाला, रेलवे घूसकांड, स्पैट्रम घोटाला, राष्ट्रमण्डल खेल घोटाला आदि अनेकों बड़े–बड़े घोटाले हमारे सामने है। अगर भ्रष्टाचार पर समय रहते काबू नहीं पाया तो जल्द ही भ्रष्टाचार में भारत विश्व का प्रथम देश होगा। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में भ्रष्टाचार के जो–रूप हमें दिखाये, वर्तमान में यह समस्या उससे कहीं अध्कि भयंकर रूप में विद्यमान है।

प्रेमचन्द गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित की इसलिए उन्होंने अपने कथा साहितय में हड़ताल आंदोलन आमरण अनशन आदि को प्रकाशित किया है। प्रेमचन्द के समय ये अंग्रेज़ों के विरूद्ध या फिर बड़े मिल–मालिकों के खिलाफ होते थे, परन्तु वर्तमान समय में हड़ताल अनशन सरकार की गलत नीतियों या भ्रष्टाचार के खिलाफ किए जाते है। 'कर्मभूमि' उपन्यास की नायिका 'सुखदा' सामाजिक अन्याय के विरूद्ध आंदोलन का मार्ग अपनाती है। वह सभी जातियों के मुखिया के साथ मिलकर नगरपालिका की भूमि प्राप्त करने के लिए हड़ताल का आयोजन करती है। इस आरोप में गिरफ्तार करके उसे जेल में बंद कर दिया जाता है। वर्तमान समाज में भी जब कोई महापुरुष या साधारण जनता सरकार की नीतियों के विरुद्ध या फिर भ्रष्टाचार से आहत होकर अनशन या हड़ताल करते हैं। तो उन्हें गिरफ्तार करके जेल में बंद कर दिया जाता है। कई बार तो अनशनकारियों पर पुलिसिया कार्यवाही की जाती है। इस प्रकार जबरदस्ती उनके आंदोलन को कुचल दिया जाता है। उदाहरण के लिए भ्रष्टाचार के विरूद्ध आंदोलन कर स्वामी रामदेव का आंदोलन जबरदस्ती कुचल दिया गया। अनशन कर रहे अनना हजारे को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया था। प्रेमचन्द ने जिस रूप में इन समस्याओं

को अपने साहितय में अभिव्यक्त किया है आज भी ये समस्याऐं उसी रूप में विद्यमान है। फर्क है तो बस मुद्दे का।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द अपने साहितय में उन मूल समस्याओं को उठाया है जो सैकड़ों वर्षों से हमारे समाज के सम्मुख मुँह खोले खड़ी हुए है। वर्तमान समाज में भी ये समस्याएँ जैसे की तैसी बनी हुई है। बस बदला है तो उनका स्वरूप। इनमें से कुछ समस्याऐं तो प्रेमचन्द युग से भी भयंकर रूप धारण किए हुए है। प्रेमचन्द के कथा साहित्य का समय पराधीनता का था। लेकिन आज हम आजाद देश में रहते हुए भी इन समस्याओं का सामान प्रतिदिन कर रहे है। किसानों के शोषण की समस्या रूढ़ि व अंधविश्वास की समस्या, दलित की समस्या महिलाओं की समस्या भ्रष्टाचार की समस्या आदि सभी समस्याओं को प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में बड़े ही सुन्दर तरीके से दर्शाया है। अंततः ये सभी समस्याएं वर्तमान समाज में भी व्याप्त है।

References

- गबन, प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन, इलाहाबद।
- सेवासदन, प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।
- कर्मभूमि प्रेमचन्द, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।
- प्रतिनिधि कहानियां, प्रेमचन्द सरस्वती प्रैस नयी दिल्ली।
- प्रेमाश्रम, प्रेमचन्द, सरस्वती प्रैस दिल्ली।
- दैनिक भास्कर, प्रकाशन, चण्डीगढ़।
- गोदान प्रेमचन्द सरस्वती प्रैस इलाहाबाद।